International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का प्रभाव

Mukesh Chand Meena [1*], Dr. Ranjit Kumar Meena [2]

[1] Research Scholer, Department of Sociology, Government College Rishabhdev Mohan Lal Sukhadiya University, Udaipur, Rajasthan, India

[2] Associate Professor, Government College Rishabhdev Mohan Lal Sukhadiya University, Udaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author: * Mukesh Chand Meena

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20354307

सारांश

भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में जनजातीय समुदायों का विशिष्ट स्थान है, जहाँ महिलाओं की भूमिका सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक परंपराओं के केंद्र में स्थित रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताएँ, शिक्षा, आजीविका, भूमि अधिकार, आर्थिक संसाधनों तक पहुँच तथा सरकारी योजनाएँ किस प्रकार जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती हैं। शोध में मिश्रित अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। अध्ययन के लिए भारत के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों से 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से यह पाया गया कि शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जबकि रूढ़ सांस्कृतिक परंपराएँ और संसाधनों पर सीमित अधिकार उनकी सामाजिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करते हैं। शोध के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि आर्थिक सशक्तिकरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, सामाजिक वैज्ञानिकों तथा विकास योजनाकारों के लिए उपयोगी आधार प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 13-04-2026
- **Accepted:** 12-05-2026
- **Published:** 23-05-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 323-332
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

Meena M C, Meena R K. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का प्रभाव. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):323-332.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: जनजातीय महिलाएँ, सामाजिक प्रस्थिति, सांस्कृतिक कारक, आर्थिक कारक, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, जनजातीय समाज, सामाजिक परिवर्तन, महिला विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था.

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, जिसमें जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, पारंपरिक जीवन शैली तथा सामाजिक संरचना के कारण विशेष महत्व रखते हैं। भारत की कुल जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग अनुसूचित जनजातियों से संबंधित है, जिनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों, पारंपरिक मान्यताओं और सामुदायिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ है। जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे कृषि, वानिकी, पशुपालन, हस्तशिल्प तथा सामुदायिक निर्णयों में भी सक्रिय भागीदारी निभाती हैं (जाबीन *et al.*, 2021)। इसके बावजूद उनकी सामाजिक प्रस्थिति अनेक सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होती रही है।

सामाजिक प्रस्थिति से आशय समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा, अधिकार, सहभागिता और निर्णयात्मक भूमिका से है। जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए उनके सांस्कृतिक परिवेश और आर्थिक संसाधनों तक पहुँच का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। सांस्कृतिक परंपराएँ, विवाह संबंधी प्रथाएँ, धार्मिक विश्वास, लैंगिक भूमिकाएँ तथा सामाजिक रीति-रिवाज जनजातीय महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों को निर्धारित करते हैं। कई जनजातीय समुदायों में महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है, जबकि कुछ समुदायों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था उनके निर्णयात्मक अधिकारों को सीमित करती है (मंजूनाथा *et al.*, 2018)।

आर्थिक कारक भी जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। शिक्षा का अभाव, गरीबी, भूमि पर स्वामित्व की कमी, सीमित रोजगार अवसर तथा असंगठित क्षेत्र में कार्य करने की बाध्यता उनकी आर्थिक निर्भरता को बढ़ाती है। आर्थिक रूप से निर्भर महिलाओं की सामाजिक सहभागिता भी सीमित होती है। इसके विपरीत जिन महिलाओं को शिक्षा, स्वरोजगार, स्वयं सहायता समूहों और सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त होता है, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि देखी जाती है।

वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रक्रियाओं ने जनजातीय समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, विस्थापन और रोजगार संरचना में बदलाव ने जनजातीय महिलाओं की भूमिका और स्थिति को प्रभावित किया है (अम्बष्ट, 1993) । अनेक क्षेत्रों में आधुनिक शिक्षा और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं, जबकि दूसरी ओर सांस्कृतिक विघटन और आर्थिक असमानता की समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं।

भारत सरकार द्वारा जनजातीय महिलाओं के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, स्वरोजगार तथा वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके बावजूद सामाजिक जागरूकता की कमी, प्रशासनिक सीमाएँ और सांस्कृतिक अवरोध इन योजनाओं की प्रभावशीलता को सीमित करते हैं (चौधरी *et al.*, 2021) । इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों का समग्र अध्ययन किया जाए।

यह शोध पत्र इसी उद्देश्य से तैयार किया गया है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सके तथा उनके सामाजिक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक उपायों की पहचान की जा सके।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति का विश्लेषण करना।
2. सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. आर्थिक कारकों और सामाजिक स्थिति के मध्य संबंध को स्पष्ट करना।
4. शिक्षा और रोजगार की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. सरकारी योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना।
6. जनजातीय महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

3. साहित्य समीक्षा

जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक और आर्थिक कारक महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

एल्विन (1964) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि जनजातीय समाजों में महिलाओं को पारंपरिक रूप से सामुदायिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उन्होंने यह भी बताया कि आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के कारण उनकी पारंपरिक भूमिका में परिवर्तन आया है।

घुर्ये (1980) ने जनजातीय समुदायों की सामाजिक संरचना का विश्लेषण करते हुए बताया कि अधिकांश जनजातीय समाजों में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी, किंतु आर्थिक संसाधनों पर सीमित अधिकार उनकी सामाजिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करते हैं।

मजूमदार (1992) के अनुसार शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने पाया कि जिन महिलाओं को शिक्षा और स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हुए, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

शर्मा (2005) ने राजस्थान और मध्य भारत की जनजातीय महिलाओं पर अध्ययन करते हुए बताया कि पारंपरिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वतंत्रता को प्रभावित करती हैं। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम महिलाओं की स्थिति सुधारने में सहायक हो सकते हैं।

पटनायक (2010) ने ओडिशा की जनजातीय महिलाओं के आर्थिक जीवन का अध्ययन करते हुए पाया कि कृषि और वन आधारित अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान अत्यधिक है, किंतु उन्हें उचित आर्थिक मान्यता प्राप्त नहीं होती।

सिंह और वर्मा (2015) ने जनजातीय महिलाओं में शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शिक्षित महिलाएँ स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और आर्थिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

कुमार (2018) ने महिला स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का अध्ययन करते हुए बताया कि वित्तीय समावेशन और सूक्ष्म वित्त योजनाओं ने जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हालिया अध्ययनों में यह भी स्पष्ट हुआ है कि डिजिटलीकरण, मोबाइल बैंकिंग और कौशल विकास कार्यक्रम जनजातीय महिलाओं के आर्थिक अवसरों को बढ़ा रहे हैं। इसके बावजूद सामाजिक रूढ़ियाँ, गरीबी और संसाधनों तक सीमित पहुँच अब भी प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है। वर्तमान अध्ययन इन्हीं कारकों के समग्र विश्लेषण का प्रयास करता है।

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव का गहन विश्लेषण करने के लिए वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया। अनुसंधान पद्धति किसी भी सामाजिक अध्ययन की आधारशिला होती है, क्योंकि इसी के माध्यम से तथ्यों का संकलन, विश्लेषण तथा निष्कर्षों का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार की विधियों का समन्वित प्रयोग किया गया (पांडेय, 2011)। अध्ययन का उद्देश्य केवल आँकड़ों का संग्रह करना नहीं था, बल्कि जनजातीय महिलाओं के जीवन, उनकी सामाजिक भूमिका, आर्थिक सहभागिता, सांस्कृतिक मान्यताओं और विकास संबंधी चुनौतियों का समग्र विश्लेषण करना था।

जनजातीय समाज की विविधता तथा सांस्कृतिक विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान पद्धति को इस प्रकार निर्मित किया गया कि वह स्थानीय परिस्थितियों, सामाजिक संरचनाओं तथा आर्थिक गतिविधियों को समुचित रूप से प्रतिबिंबित कर सके। अनुसंधान प्रक्रिया में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया ताकि अध्ययन अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक बन सके। अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं के अनुभवों, विचारों और व्यवहारों को समझने के लिए प्रत्यक्ष संपर्क, समूह चर्चा तथा साक्षात्कार की तकनीकों का प्रयोग किया गया (बाल *et al.*, 2019)।

4.1 अनुसंधान प्रारूप

इस अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रारूप का उपयोग किया गया। वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करना था, जबकि विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रारूप के माध्यम से विभिन्न कारकों और सामाजिक प्रस्थिति के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया। यह डिज़ाइन अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप उपयुक्त पाया गया क्योंकि जनजातीय महिलाओं की स्थिति अनेक सामाजिक एवं आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है, जिनका समग्र विश्लेषण आवश्यक था।

अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति को अपनाया गया, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की विधियों का उपयोग किया गया (बसु, 1993) । गुणात्मक पद्धति के माध्यम से महिलाओं के अनुभवों, सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक व्यवहारों और पारिवारिक संरचनाओं का अध्ययन किया गया, जबकि मात्रात्मक पद्धति के माध्यम से शिक्षा, आय, रोजगार, सामाजिक सहभागिता तथा आर्थिक संसाधनों से संबंधित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

अनुसंधान प्रारूप को तैयार करते समय यह ध्यान रखा गया कि जनजातीय समाजों की सामाजिक संरचना सामान्य ग्रामीण समाजों से भिन्न होती है। इसलिए अध्ययन में सांस्कृतिक संदर्भों को विशेष महत्व दिया गया। कई जनजातीय समुदायों में पारंपरिक संस्थाएँ और सामुदायिक निर्णय प्रणाली सामाजिक जीवन को नियंत्रित करती हैं। इन संस्थाओं का महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इसी कारण अनुसंधान में सांस्कृतिक आयामों को भी प्रमुखता दी गई।

अध्ययन का क्षेत्र चयनित जनजातीय बहुल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रखा गया, जहाँ महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का प्रत्यक्ष अवलोकन संभव था। अनुसंधान की रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गई कि यह सामाजिक वास्तविकताओं को वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत कर सके। अध्ययन में महिलाओं की शिक्षा, विवाह संबंधी परंपराएँ, आर्थिक गतिविधियाँ, सामाजिक निर्णयों में सहभागिता, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और सरकारी योजनाओं तक पहुँच जैसे विभिन्न आयामों को शामिल किया गया।

अनुसंधान के दौरान तुलनात्मक दृष्टिकोण भी अपनाया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न आयु वर्गों, शैक्षिक स्तरों और आर्थिक पृष्ठभूमियों की महिलाओं के अनुभवों का विश्लेषण किया गया। इससे यह समझने में सहायता मिली कि कौन से कारक महिलाओं की सामाजिक स्थिति को अधिक प्रभावित करते हैं (खान *et al.*, 2020) । अनुसंधान प्रारूप में नैतिकता के सिद्धांतों का भी पालन किया गया। उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं को गोपनीय रखा गया तथा उनकी सहमति के बाद ही जानकारी संकलित की गई।

अध्ययन में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की वैज्ञानिक पद्धतियों का पालन करते हुए निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का प्रयास किया गया। अनुसंधान प्रारूप ने अध्ययन को व्यवस्थित दिशा प्रदान की और शोध उद्देश्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4.2 डेटा संग्रहण

अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। सामाजिक अनुसंधान में विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए दोनों प्रकार के स्रोत आवश्यक माने जाते हैं। प्राथमिक आँकड़ों के माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त हुई, जबकि द्वितीयक आँकड़ों ने अध्ययन को सैद्धांतिक और तुलनात्मक आधार प्रदान किया (मित्रा, 2008) ।

प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए संरचित प्रश्नावली, व्यक्तिगत साक्षात्कार, समूह चर्चा तथा प्रत्यक्ष अवलोकन की तकनीकों का उपयोग किया गया। प्रश्नावली को इस प्रकार तैयार किया गया कि वह उत्तरदाताओं की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान कर सके। प्रश्नावली में शिक्षा, रोजगार, पारिवारिक आय, भूमि स्वामित्व, सामाजिक सहभागिता, स्वास्थ्य, विवाह संबंधी प्रथाएँ तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए।

व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण तकनीक रही। इसके माध्यम से उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक समस्याओं और सांस्कृतिक व्यवहारों की गहन जानकारी प्राप्त हुई। कई जनजातीय महिलाओं ने अपनी आर्थिक चुनौतियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक प्रतिबंधों से संबंधित अनुभव साझा किए। साक्षात्कार प्रक्रिया में स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक संदर्भों का ध्यान रखा गया ताकि उत्तरदाता सहजता से अपनी बात रख सकें।

समूह चर्चा का उपयोग सामुदायिक दृष्टिकोण को समझने के लिए किया गया। समूह चर्चाओं में महिलाओं ने सामूहिक रूप से सामाजिक समस्याओं, आर्थिक अवसरों, सरकारी योजनाओं तथा सांस्कृतिक परंपराओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इससे यह समझने में सहायता मिली कि समुदाय स्तर पर महिलाओं की भूमिका को किस प्रकार देखा जाता है। समूह चर्चा ने महिलाओं के बीच सामूहिक चेतना और सामाजिक सहभागिता के स्तर को समझने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रत्यक्ष अवलोकन पद्धति के माध्यम से शोधकर्ता ने जनजातीय क्षेत्रों की सामाजिक परिस्थितियों, जीवन शैली, कार्य विभाजन और सांस्कृतिक गतिविधियों का निरीक्षण किया। इस प्रक्रिया से अध्ययन अधिक यथार्थवादी और विश्वसनीय बना। अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि महिलाएँ कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रह तथा घरेलू कार्यों में

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अत्यधिक श्रम करती हैं, किंतु उनके कार्यों को पर्याप्त सामाजिक मान्यता नहीं मिलती।

द्वितीयक आँकड़ों के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया गया। पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आँकड़ों, विश्वविद्यालयीय शोध प्रबंधों तथा गैर-सरकारी संगठनों की रिपोर्टों का अध्ययन किया गया। द्वितीयक स्रोतों ने अध्ययन को ऐतिहासिक और सैद्धांतिक आधार प्रदान किया। जनगणना रिपोर्टों से जनजातीय महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और जनसंख्या संबंधी आँकड़े प्राप्त किए गए। सरकारी रिपोर्टों से महिला विकास योजनाओं और जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी संकलित की गई (मित्रा, 2008)।

आँकड़ों के संकलन के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि जानकारी प्रामाणिक और अद्यतन हो। प्राथमिक आँकड़ों का सत्यापन विभिन्न स्रोतों के माध्यम से किया गया ताकि अध्ययन की विश्वसनीयता बनी रहे। अनुसंधान प्रक्रिया में सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक विविधता का विशेष ध्यान रखा गया।

4.3 नमूना

अध्ययन के लिए कुल 300 जनजातीय महिलाओं का चयन किया गया। नमूना चयन की प्रक्रिया अनुसंधान का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग होती है, क्योंकि इसी के माध्यम से अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग किया गया ताकि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों की महिलाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया जा सके।

नमूना चयन के दौरान विभिन्न जनजातीय बहुल क्षेत्रों को शामिल किया गया। चयनित क्षेत्रों में ग्रामीण और अर्द्ध-ग्रामीण दोनों प्रकार के समुदाय सम्मिलित थे। इससे अध्ययन को व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त हुआ। अध्ययन में विभिन्न आयु वर्गों, शैक्षिक स्तरों, वैवाहिक स्थितियों और आर्थिक वर्गों की महिलाओं को शामिल किया गया ताकि सामाजिक विविधता को समझा जा सके।

उत्तरदाताओं का चयन करते समय यह सुनिश्चित किया गया कि अध्ययन केवल किसी एक विशेष जनजातीय समूह तक सीमित न रहे (सिंह *et al*., 1993) । विभिन्न जनजातीय समुदायों की महिलाओं को शामिल करके तुलनात्मक विश्लेषण संभव बनाया गया। इससे यह समझने में सहायता मिली कि सांस्कृतिक विविधता महिलाओं की सामाजिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित करती है।

नमूना चयन में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को भी ध्यान में रखा गया। कृषि कार्य, मजदूरी, स्वरोजगार, वन आधारित कार्य तथा घरेलू श्रम से जुड़ी महिलाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। इससे आर्थिक कारकों के प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण संभव हुआ।

अध्ययन में आयु वर्ग के आधार पर भी उत्तरदाताओं को वर्गीकृत किया गया। युवा महिलाओं, मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं तथा वृद्ध महिलाओं के अनुभवों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इससे यह समझने में सहायता मिली कि सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकता का प्रभाव विभिन्न पीढ़ियों पर किस प्रकार पड़ रहा है।

शैक्षिक स्तर के आधार पर भी उत्तरदाताओं का वर्गीकरण किया गया। निरक्षर, प्राथमिक शिक्षित, माध्यमिक शिक्षित तथा उच्च शिक्षित महिलाओं की सामाजिक सहभागिता और आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया (चटर्जी, 2014) । इससे शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण के मध्य संबंध स्पष्ट हुआ। नमूना चयन की प्रक्रिया में निष्पक्षता बनाए रखने का प्रयास किया गया। अध्ययन के दौरान किसी विशेष वर्ग या समूह को प्राथमिकता नहीं दी गई। इससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक वस्तुनिष्ठ और प्रतिनिधिक बने।

4.4 सांख्यिकीय उपकरण

संग्रहित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया गया। सामाजिक अनुसंधान में सांख्यिकीय विश्लेषण का उद्देश्य आँकड़ों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना तथा विभिन्न कारकों के मध्य संबंधों को स्पष्ट करना होता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिशत, माध्य, सहसंबंध, तुलनात्मक विश्लेषण तथा सारणीकरण जैसी तकनीकों का उपयोग किया गया।

प्रतिशत पद्धति का उपयोग उत्तरदाताओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए किया गया। शिक्षा स्तर, रोजगार, आय, सामाजिक सहभागिता तथा सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संबंधित आँकड़ों को प्रतिशत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। इससे विभिन्न श्रेणियों के मध्य तुलना करना सरल हुआ।

माध्य का उपयोग आय, परिवार के आकार तथा सामाजिक सहभागिता के औसत स्तर को समझने के लिए किया गया। माध्य के माध्यम से यह ज्ञात किया गया कि महिलाओं की औसत आर्थिक स्थिति और सामाजिक सहभागिता का स्तर क्या है (कुसुगल, 2013) ।

सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग शिक्षा, आय और सामाजिक स्थिति के मध्य संबंधों का अध्ययन करने के लिए किया गया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। सहसंबंध विश्लेषण ने विभिन्न कारकों के मध्य परस्पर संबंधों को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न आयु वर्गों, शैक्षिक स्तरों और आर्थिक पृष्ठभूमियों की महिलाओं की सामाजिक स्थिति की तुलना की गई। इससे यह समझने में सहायता मिली कि कौन से कारक महिलाओं के सामाजिक विकास में अधिक प्रभावी हैं।

सारणीकरण और ग्राफिकल प्रस्तुतीकरण का उपयोग आँकड़ों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया गया। तालिकाओं और सांख्यिकीय प्रस्तुतियों ने अध्ययन को अधिक स्पष्ट और व्यवस्थित बनाया। विश्लेषण के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ और तथ्यपरक हों (मैती *et al*., 2014) ।

अध्ययन में सांख्यिकीय उपकरणों के उपयोग ने अनुसंधान को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया तथा निष्कर्षों की विश्वसनीयता को सुदृढ़ किया। इन उपकरणों के माध्यम से सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव का समग्र विश्लेषण संभव हो सका।

5. परिणाम और विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आयामों के आधार पर किया गया। अध्ययन के दौरान संकलित आँकड़ों को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत कर उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा, रोजगार, आर्थिक संसाधनों तक पहुँच, सांस्कृतिक परंपराएँ तथा सामाजिक संरचनाएँ जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों को विभिन्न उपशीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5.1 उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति

शिक्षा स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	96	32%
प्राथमिक शिक्षा	78	26%
माध्यमिक शिक्षा	69	23%
उच्च माध्यमिक	36	12%
स्नातक एवं अधिक	21	7%

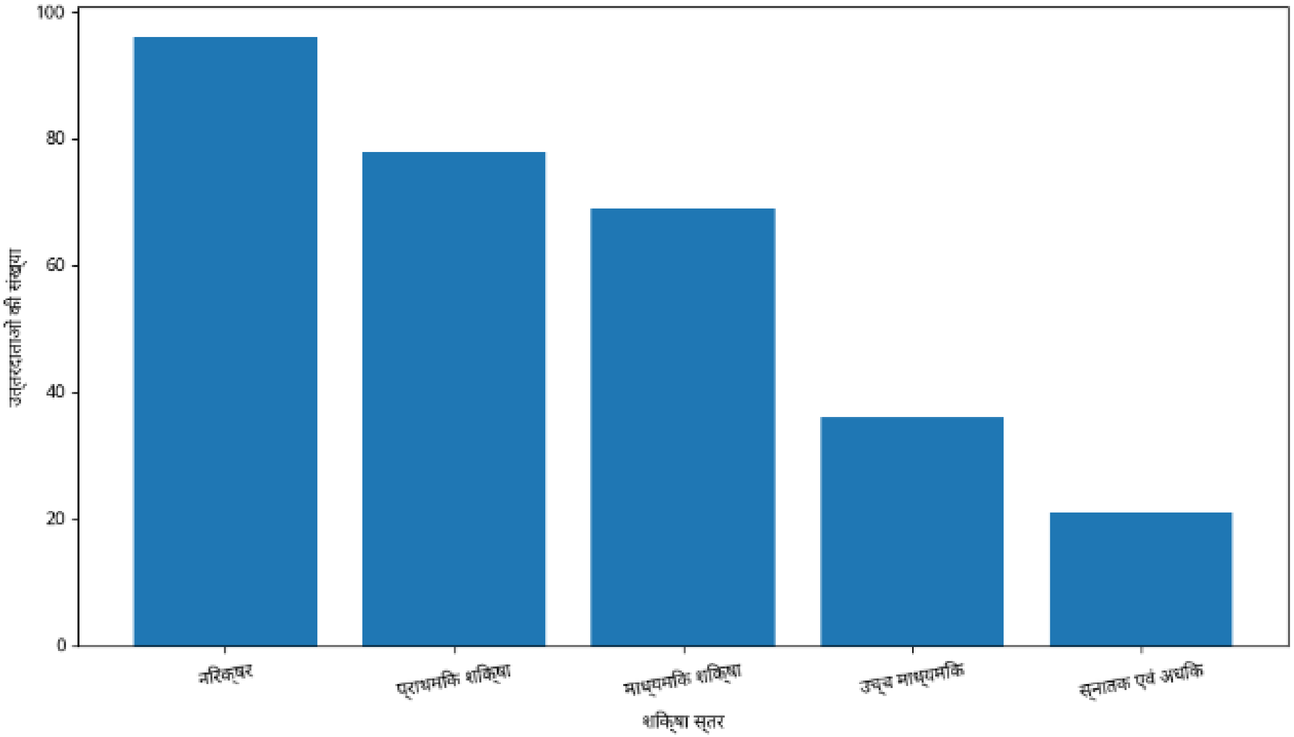

चित्र:1 उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति

शिक्षा किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण का प्रमुख आधार मानी जाती है। अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनजातीय महिलाओं का एक बड़ा वर्ग अभी भी शिक्षा से वंचित है। कुल 300 उत्तरदाताओं में से 96 महिलाएँ निरक्षर पाई गईं, जो कुल उत्तरदाताओं का 32 प्रतिशत हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार अभी भी सीमित है। निरक्षरता महिलाओं की सामाजिक जागरूकता, आर्थिक स्वतंत्रता तथा निर्णय क्षमता को प्रभावित करती है।

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 26 पाया गया। यह वर्ग बुनियादी शिक्षा से जुड़ा होने के बावजूद उच्च शिक्षा तक नहीं पहुँच सका। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रतिशत 23 रहा, जो यह संकेत देता है कि शिक्षा के उच्च स्तर तक पहुँचने में सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ मौजूद हैं। उच्च माध्यमिक स्तर तक पहुँचने वाली महिलाओं का प्रतिशत केवल 12 रहा, जबकि स्नातक और उससे अधिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या अत्यंत सीमित पाई गई (पुष्पलता, 2023)।

अध्ययन के दौरान यह देखा गया कि आर्थिक गरीबी, विद्यालयों की दूरी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा सामाजिक मान्यताएँ शिक्षा के निम्न स्तर के प्रमुख कारण हैं। कई क्षेत्रों में बाल विवाह और घरेलू कार्यों में अत्यधिक संलग्नता के कारण लड़कियाँ प्रारंभिक स्तर के बाद शिक्षा छोड़ देती हैं। परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण शिक्षा की अपेक्षा श्रम को अधिक महत्व दिया जाता है।

साक्षात्कारों से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन महिलाओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त की, उनकी सामाजिक सहभागिता और आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक था। शिक्षित महिलाएँ स्वास्थ्य, पोषण, परिवार नियोजन और सरकारी योजनाओं के प्रति अधिक जागरूक पाई गईं। वे सामाजिक निर्णयों में सक्रिय भागीदारी करती हैं तथा आर्थिक अवसरों की तलाश में भी अधिक सक्षम होती हैं।

शिक्षा और सामाजिक स्थिति के मध्य गहरा संबंध अध्ययन में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। निरक्षर महिलाओं की तुलना में शिक्षित महिलाओं में आत्मनिर्भरता और सामाजिक चेतना अधिक पाई गई। कई महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि शिक्षा ने उन्हें अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक बनाया।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि सरकारी शिक्षा योजनाओं और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों का कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, किंतु दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में विद्यालयों की कमी, परिवहन सुविधाओं का अभाव

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

तथा शिक्षकों की अनुपलब्धता अभी भी प्रमुख समस्याएँ हैं। डिजिटल शिक्षा और ऑनलाइन संसाधनों की पहुँच भी सीमित पाई गई, जिससे उच्च शिक्षा के अवसर प्रभावित होते हैं (रंगनाथ, 2014)।

शिक्षा के निम्न स्तर का प्रभाव महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कम शिक्षित महिलाएँ मुख्यतः असंगठित क्षेत्र और कम आय वाले कार्यों तक सीमित रहती हैं। इसके विपरीत उच्च शिक्षित महिलाओं को सरकारी सेवाओं, स्वयं सहायता समूहों और उद्यमिता से जुड़ने के अवसर अधिक प्राप्त होते हैं। इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा के माध्यम से ही महिलाओं में सामाजिक चेतना, आर्थिक आत्मनिर्भरता और निर्णय क्षमता का विकास संभव हो सकता है।

5.2 व्यावसायिक संरचना

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
कृषि कार्य	129	43%
मजदूरी	84	28%
वन आधारित कार्य	42	14%
स्वरोजगार	27	9%
सरकारी/निजी सेवा	18	6%

व्यावसायिक संरचना किसी भी समुदाय की आर्थिक स्थिति और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण संकेतक होती है। अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों से स्पष्ट हुआ कि जनजातीय महिलाओं का अधिकांश भाग कृषि और असंगठित श्रम क्षेत्र में संलग्न है। कुल उत्तरदाताओं में से 43 प्रतिशत महिलाएँ कृषि कार्य से जुड़ी हुई थीं। यह तथ्य दर्शाता है कि जनजातीय क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था अभी भी मुख्यतः कृषि आधारित है।

कृषि कार्य में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई। वे बीज बोने, निराई-गुड़ाई, फसल कटाई, पशुपालन तथा खाद्य प्रसंस्करण जैसे कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। इसके बावजूद कृषि भूमि पर स्वामित्व और निर्णय लेने का अधिकार मुख्यतः पुरुषों के पास केंद्रित पाया गया। इससे महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता सीमित होती है।

मजदूरी करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 28 पाया गया। यह वर्ग मुख्यतः निर्माण कार्य, खेतिहर मजदूरी तथा अस्थायी श्रम कार्यों में संलग्न था। मजदूरी करने वाली महिलाओं की आय अनिश्चित और कम पाई गई। कई महिलाओं ने यह बताया कि उन्हें पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी प्राप्त होती है। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण उन्हें सामाजिक सुरक्षा और श्रमिक अधिकारों का लाभ भी पर्याप्त रूप से प्राप्त नहीं होता।

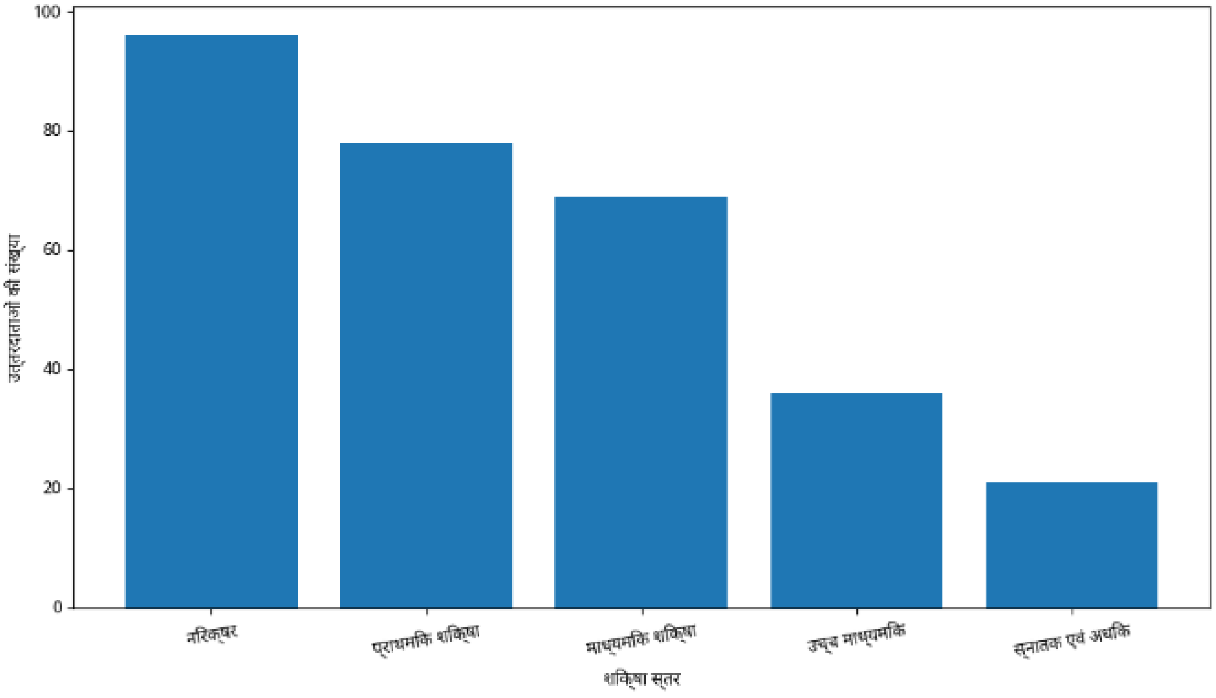

चित्र:2 व्यावसायिक संरचना

वन आधारित कार्यों से जुड़ी महिलाओं का प्रतिशत 14 पाया गया। ये महिलाएँ वनोपज संग्रह, लकड़ी, पत्तियाँ, फल तथा औषधीय पौधों के संग्रहण से अपनी आजीविका अर्जित करती हैं। अध्ययन में यह पाया गया कि वन संसाधनों पर बढ़ते नियंत्रण और पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण इन महिलाओं की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो रही है।

स्वरोजगार से जुड़ी महिलाओं का प्रतिशत केवल 9 पाया गया। स्वरोजगार में हस्तशिल्प, सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण तथा लघु उद्यम शामिल थे। स्वयं सहायता समूहों और सूक्ष्म वित्त योजनाओं ने कुछ महिलाओं को स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित किया है, किंतु वित्तीय संसाधनों और बाज़ार तक सीमित पहुँच अभी भी प्रमुख बाधाएँ हैं।

सरकारी और निजी सेवाओं में कार्यरत महिलाओं का प्रतिशत केवल 6 पाया गया। यह स्थिति दर्शाती है कि उच्च शिक्षा और औपचारिक रोजगार तक महिलाओं की पहुँच अभी भी सीमित है। जिन महिलाओं को सरकारी सेवाओं में अवसर प्राप्त हुए, उनकी सामाजिक स्थिति और आर्थिक सुरक्षा अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि महिलाओं की व्यावसायिक स्थिति सीधे उनकी शिक्षा

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और आर्थिक संसाधनों से जुड़ी हुई है (धनश्री *et al*., 2014)। शिक्षित महिलाओं में स्वरोजगार और औपचारिक रोजगार की संभावना अधिक पाई गई, जबकि कम शिक्षित महिलाएँ मुख्यतः श्रम आधारित कार्यों तक सीमित रहीं।

व्यावसायिक संरचना के विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि महिलाओं के कार्यों को अक्सर पारिवारिक सहायता के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण उन्हें उचित आर्थिक मान्यता नहीं मिलती। घरेलू और कृषि कार्यों में उनके योगदान को आर्थिक उत्पादकता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। अध्ययन यह संकेत देता है कि कौशल विकास, वित्तीय समावेशन और उद्यमिता कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया जा सकता है। यदि महिलाओं को प्रशिक्षण, बाज़ार और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाए, तो उनकी सामाजिक प्रस्थिति अधिक सुदृढ़ हो सकती है।

5.3 आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक कारक	सकारात्मक प्रभाव (%)	नकारात्मक प्रभाव (%)
शिक्षा	74	26
स्वरोजगार	68	32
सरकारी योजनाएँ	59	41
भूमि अधिकार	38	62
बैंकिंग सुविधाएँ	52	48

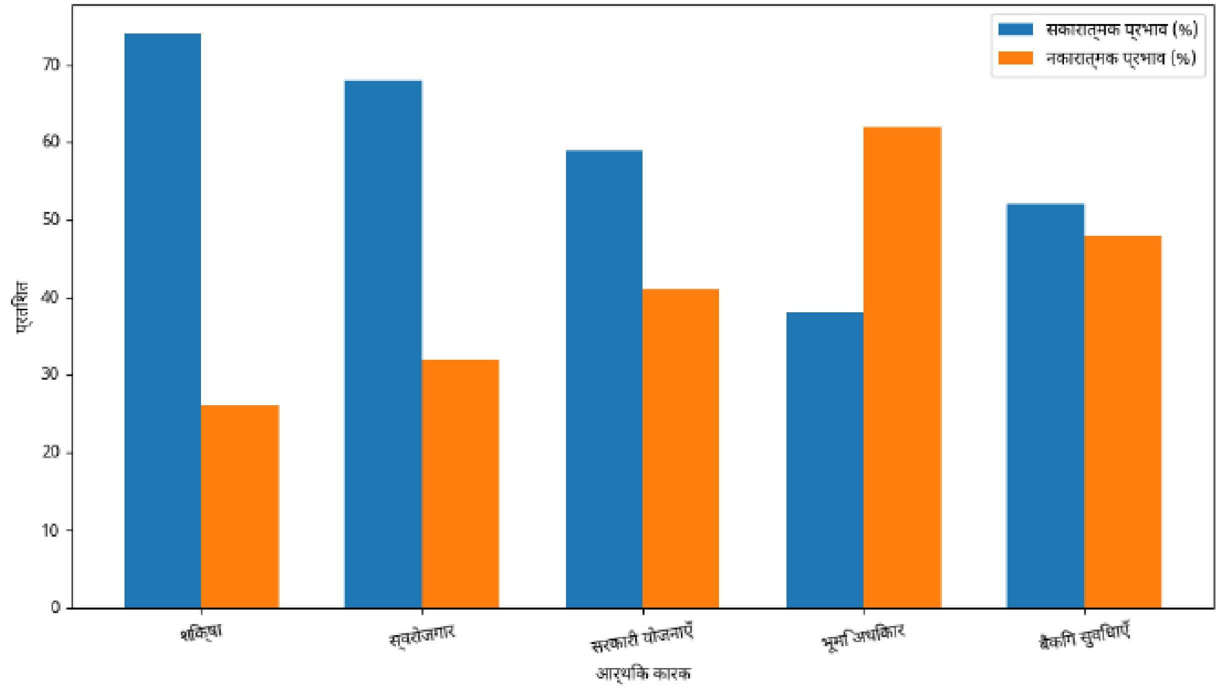

चित्र:3 आर्थिक कारकों का प्रभाव

अध्ययन में आर्थिक कारकों का जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया। शिक्षा को सबसे प्रभावशाली आर्थिक कारक के रूप में पहचाना गया। 74 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि शिक्षा ने उनकी सामाजिक जागरूकता और आर्थिक अवसरों में वृद्धि की है। शिक्षित महिलाएँ स्वरोजगार, सरकारी योजनाओं और सामाजिक निर्णयों में अधिक सक्रिय पाई गईं।

स्वरोजगार को भी महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने वाला प्रमुख कारक माना गया। 68 प्रतिशत महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि स्वरोजगार के माध्यम से उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सम्मान में वृद्धि हुई। स्वयं सहायता समूहों और सूक्ष्म वित्त योजनाओं ने महिलाओं को आय सृजन के अवसर प्रदान किए हैं।

सरकारी योजनाओं का प्रभाव मिश्रित पाया गया (लाल, 2016) । 59 प्रतिशत महिलाओं ने योजनाओं को लाभकारी माना, जबकि 41 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि उन्हें योजनाओं की पर्याप्त जानकारी नहीं है या योजनाओं का लाभ उन तक नहीं पहुँच पाया। कई क्षेत्रों में प्रशासनिक जटिलताएँ और भ्रष्टाचार योजनाओं की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।

भूमि अधिकार महिलाओं की सामाजिक स्थिति से सीधे जुड़े पाए गए। केवल 38 प्रतिशत महिलाओं ने भूमि अधिकारों को सकारात्मक कारक माना, जबकि 62 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि भूमि पर स्वामित्व की कमी उनकी आर्थिक निर्भरता को बढ़ाती है। भूमि स्वामित्व से वंचित महिलाएँ आर्थिक निर्णयों में सीमित भूमिका निभाती हैं।

बैंकिंग सुविधाओं के संदर्भ में अध्ययन में मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए। 52 प्रतिशत महिलाओं ने बैंकिंग सेवाओं को उपयोगी माना, जबकि 48 प्रतिशत महिलाओं ने बैंकिंग प्रक्रियाओं को जटिल बताया। डिजिटल बैंकिंग और वित्तीय साक्षरता का अभाव ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख चुनौती के रूप में सामने आया (रंजीतकुमार *et al*., 2023)। आर्थिक कारकों के विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं की सामाजिक स्थिति को मजबूत बनाती है। जिन महिलाओं के पास आय के स्थायी स्रोत थे, उनकी पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में भागीदारी अधिक पाई गई।

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5.4 सामाजिक स्थिति को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक कारक

सांस्कृतिक कारक	प्रभाव स्तर (%)
पारंपरिक रीति-रिवाज	71
विवाह प्रथाएँ	64
धार्मिक मान्यताएँ	58
लैंगिक भूमिकाएँ	76
सामुदायिक निर्णय व्यवस्था	49

सांस्कृतिक कारक जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति को गहराई से प्रभावित करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि लैंगिक भूमिकाएँ महिलाओं की स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं। 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि पारंपरिक लैंगिक विभाजन महिलाओं के अवसरों को सीमित करता है।

पारंपरिक रीति-रिवाजों का प्रभाव 71 प्रतिशत पाया गया। कई समुदायों में महिलाओं की भूमिका घरेलू और श्रम आधारित कार्यों तक सीमित मानी जाती है। इससे उनकी शिक्षा और आर्थिक विकास प्रभावित होता है। विवाह प्रथाओं का प्रभाव 64 प्रतिशत पाया गया। बाल विवाह और प्रारंभिक वैवाहिक जिम्मेदारियाँ महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों को सीमित करती हैं। कई महिलाओं ने बताया कि विवाह के बाद उनकी सामाजिक स्वतंत्रता कम हो जाती है (मन्ना *et al.*, 2016) ।

धार्मिक मान्यताओं का प्रभाव 58 प्रतिशत पाया गया। कुछ धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं की भूमिका को पारंपरिक सीमाओं में बाँधती हैं। वहीं कुछ समुदायों में महिलाओं को सामुदायिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान भी प्राप्त है। सामुदायिक निर्णय व्यवस्था का प्रभाव 49 प्रतिशत पाया गया। कई जनजातीय समुदायों में निर्णय प्रक्रिया पुरुष प्रधान पाई गई, जिससे महिलाओं की भागीदारी सीमित रहती है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की सामुदायिक संगठनों में सहभागिता बढ़ रही है (मन्ना, 2024) ।

सांस्कृतिक विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा के प्रभाव से महिलाओं में नई जागरूकता विकसित हो रही है, किंतु पारंपरिक संरचनाएँ अभी भी उनकी सामाजिक प्रस्थिति को प्रभावित करती हैं।

5.5 शिक्षा और सामाजिक भागीदारी के बीच सहसंबंध

अध्ययन में शिक्षा और सामाजिक सहभागिता के मध्य स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गया। निरक्षर महिलाओं की सामाजिक सहभागिता केवल 28 प्रतिशत पाई गई, जबकि स्नातक और उससे अधिक शिक्षित महिलाओं की सहभागिता 84 प्रतिशत रही। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। उच्च शिक्षित महिलाएँ पंचायत, स्वयं सहायता समूहों, स्वास्थ्य कार्यक्रमों तथा सामाजिक संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता और नेतृत्व कौशल का विकास करती है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होती हैं तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान में सक्रिय योगदान देती हैं (पराय, 2019) । सामाजिक सहभागिता के विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि शिक्षा महिलाओं को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलने का अवसर प्रदान करती है (बिस्वास *et al.*, 2022) । शिक्षित महिलाएँ परिवार और समाज दोनों स्तरों पर निर्णय प्रक्रिया में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाती हैं।

6. चर्चा

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति बहुआयामी कारकों से प्रभावित होती है। सांस्कृतिक कारक उनकी सामाजिक भूमिका, निर्णयात्मक अधिकार और स्वतंत्रता को निर्धारित करते हैं। कई जनजातीय समुदायों में महिलाओं को पारंपरिक रूप से श्रम और सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, किंतु पितृसत्तात्मक सोच और लैंगिक विभाजन उनकी सामाजिक प्रगति को सीमित करते हैं।

शिक्षा जनजातीय महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का प्रमुख आधार बनकर उभरती है। अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षित महिलाएँ सामाजिक निर्णयों, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता तथा आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय होती हैं (बघेल *et al.*, 2021) । शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास करती है।

आर्थिक कारकों का प्रभाव भी अत्यंत महत्वपूर्ण पाया गया। जिन महिलाओं को स्वरोजगार, स्वयं सहायता समूहों तथा सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हुआ, उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार देखा गया। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को परिवार और समाज में अधिक सम्मान प्रदान करती है। इसके विपरीत गरीबी और संसाधनों पर सीमित अधिकार सामाजिक असमानता को बढ़ाते हैं (ईगलवुमन, 2009) ।

भूमि स्वामित्व की कमी जनजातीय महिलाओं की आर्थिक निर्भरता का प्रमुख कारण है। अधिकांश महिलाएँ कृषि कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, किंतु भूमि पर स्वामित्व अधिकार पुरुषों के पास केंद्रित रहते हैं। इससे महिलाओं की निर्णयात्मक शक्ति सीमित हो जाती है।

सांस्कृतिक परिवर्तन और आधुनिकता का प्रभाव भी अध्ययन में परिलक्षित हुआ। शिक्षा, मीडिया और डिजिटल तकनीकों ने महिलाओं में नई जागरूकता उत्पन्न की है। मोबाइल बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा और सरकारी डिजिटल योजनाओं ने महिलाओं को आर्थिक अवसर प्रदान किए हैं। इसके बावजूद दूरस्थ क्षेत्रों में तकनीकी सुविधाओं की कमी और डिजिटल साक्षरता का अभाव चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

सरकारी योजनाओं का प्रभाव मिश्रित रूप में सामने आया (बिस्वास *et al.*, 2022) । जिन क्षेत्रों में प्रशासनिक पहुँच और सामाजिक जागरूकता अधिक थी, वहाँ योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव देखा गया। दूसरी ओर कई क्षेत्रों में सूचना के अभाव और भ्रष्टाचार के कारण योजनाओं का लाभ सीमित रहा।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि सामाजिक सशक्तिकरण केवल आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता से संभव नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता भी समान रूप से आवश्यक हैं। जनजातीय महिलाओं के विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है जिसमें आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक आयामों का समन्वय हो।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति पर सांस्कृतिक और आर्थिक दोनों प्रकार के कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। सांस्कृतिक परंपराएँ, लैंगिक भूमिकाएँ और सामाजिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वतंत्रता तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करती हैं। वहीं शिक्षा, रोजगार, आर्थिक संसाधनों तक पहुँच और सरकारी योजनाएँ उनकी सामाजिक

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है। शिक्षित महिलाएँ सामाजिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं के आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान को बढ़ाती है। स्वयं सहायता समूहों, स्वरोजगार योजनाओं और वित्तीय समावेशन कार्यक्रमों ने महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया है। इसके बावजूद गरीबी, अशिक्षा, भूमि अधिकारों की कमी और पारंपरिक रूढ़ियाँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य, शिक्षा और तकनीकी सुविधाओं की कमी महिलाओं के विकास को प्रभावित करती है। इसलिए यह आवश्यक है कि नीति-निर्माता जनजातीय महिलाओं के लिए समावेशी विकास रणनीतियाँ तैयार करें।

सरकार और सामाजिक संगठनों को शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। भूमि अधिकारों और आर्थिक संसाधनों तक महिलाओं की पहुँच सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लैंगिक समानता और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि जनजातीय महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण केवल उनके व्यक्तिगत विकास का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह समग्र सामाजिक और राष्ट्रीय विकास से जुड़ा हुआ विषय है। जब जनजातीय महिलाएँ शिक्षा, आर्थिक अवसरों और सामाजिक अधिकारों से सशक्त होंगी, तभी समावेशी और संतुलित विकास की अवधारणा वास्तविक रूप में साकार हो सकेगी।

संदर्भ

1. जाबीन एस, आलम ए, जवाद एम. जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर सामाजिक कारकों का प्रभाव: (पूर्ववर्ती) मोहम्मद एजेंसी का एक अध्ययन. ज डेवलपमेंट सोशल साइंसेज. 2021;2(4):440-455।
2. मंजूनाथा BR, गंगाधर MR. बेट्टाकुरुबा जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: कर्नाटक के चामराजनगर जिले का एक अध्ययन. एंट्रोकोम ऑनलाइन ज एंथ्रोपोलॉजी. 2018;14(1) ।
3. अम्बष्ट NK. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति: शैक्षिक निहितार्थ. सोशल चेंज. 1993;23(4):60-65।
4. चौधरी A, राउल SK, मेटे JK. भारत में जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के संदर्भ में. ज लीगल एथिकल रेगुलेटरी इश्यूज. 2021; 24:1।
5. पांडेय K. जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: हिमाचल प्रदेश के भरमौर क्षेत्र की गद्दी जनजाति का अध्ययन. इंटरनेशनल ज सोशियोलॉजी एंथ्रोपोलॉजी. 2011;3(6):189।
6. बाल M, मैती A, प्रिंसिपल JNP. जनजातीय महिलाओं के शैक्षिक विकास पर अर्थव्यवस्था और सामाजिकता का प्रभाव. इंटरनेशनल ज रिसर्च एनालिटिकल रिव्यूज़. 2019;6(2) ।
7. बसु SK. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति. सोशल चेंज. 1993;23(4):19-39।
8. खान S, हसन Z. भारत में जनजातीय महिलाएँ: लैंगिक असमानताएँ और उनके प्रभाव. इंटरनेशनल ज रिसर्च. 2020;9(9):8-17।
9. मित्रा A. भारत की अनुसूचित जनजातियों में महिलाओं की स्थिति. ज सोशियो-इकोनॉमिक्स. 2008;37(3):1202-1217।
10. मित्रा A. भारत की अनुसूचित जनजातियों में महिलाओं की स्थिति. ज सोशियो-इकोनॉमिक्स. 2008;37(3):1202-1217।
11. सिंह AK, राज्यलक्ष्मी C. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति. सोशल चेंज. 1993;23(4):3-18।
12. चटर्जी P. भारत में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति: चुनौतियाँ और आगे की राह. इंटरनेशनल ज इंटरडिसिप्लिनरी मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज़. 2014;2(2):55-60।
13. कुसुगल PS. जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति: एक अध्ययन. इकोनॉमिक्स. 2013;2(11) ।
14. मैती S, हाओबिजाम V, सेन A. कुकी जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: मणिपुर के चुराचांदपुर जिले का अध्ययन. अमेरिकन-यूरेशियन ज साइंटिफिक रिसर्च. 2014;9(5):120-128।
15. पुष्पलता G. विशाखापट्टनम जिले में सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण. इंटरनेशनल ज सोशल साइंसेज. 2023;5(02) ।
16. रंगनाथ B. जनजातीय पहचान और राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास के निहितार्थ: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. इंटरनेशनल ज एप्लाइड साइंस इंजीनियरिंग. 2014;2(1):27।
17. धनश्री K, विजयाभिनंदना B, प्रदीपकुमार PB. आंध्र प्रदेश के उच्च पर्वतीय और जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण. इंटरनेशनल ज इनोवेटिव रिसर्च साइंस इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी. 2014;3(2):9360-9368।
18. लाल BS. जनजातीय महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण: तेलंगाना राज्य का अध्ययन. सोशल साइंसेज इंटरनेशनल रिसर्च ज. 2016;2(1):407-409।
19. मन्ना S, सरकार R. जनजातीय समाज में महिलाओं की स्थिति: पश्चिम मिदनापुर, पश्चिम बंगाल की तीन जनजातीय समुदायों का अध्ययन. जेंडर असिमेट्री इन कंटेम्पररी इंडिया. 2016:226-234।
20. पराय MR. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति विशेष संदर्भ: सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक दशाएँ. इल्कोगेरेटिम ऑनलाइन-एलीमेंट्री एजुकेशन ऑनलाइन. 2019;18(4):2284-2292।
21. बघेल PK, तिवारी A. भारत में जनजातीय महिलाओं की स्थिति. एनल्स रोमानियन सोसाइटी सेल बायोलॉजी. 2021;25(6) ।
22. ईगलवुमन A. जनजातीय राष्ट्र और जनजातीय अर्थशास्त्र: संयुक्त राज्य अमेरिका में पीढ़ीगत भौतिक गरीबी और सांस्कृतिक संपदा के ऐतिहासिक एवं समकालीन प्रभाव. वॉशबर्न लॉ ज. 2009; 49:805।
23. बोस S, चतुर्वेदी P. जनजातीय महिलाओं द्वारा सरकारी योजनाओं के उपयोग पर सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव।
24. बिस्वास S, हांसदा CK, सिंह N, मल्ला VR, पाल AK. भारत में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की पोषण स्थिति के निर्धारक. क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजी ग्लोबल हेल्थ. 2022; 17:101119।
25. बिस्वास S, हांसदा CK, सिंह N, मल्ला VR, पाल AK. भारत में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की पोषण स्थिति के निर्धारक. क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजी ग्लोबल हेल्थ. 2022; 17:101119।

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

26. मन्ना A. जनजातीय महिलाओं में सशक्तिकरण और लैंगिक समानता. इंटीग्रेटेड ज रिसर्च आर्ट्स ह्यूमैनिटीज. 2024;4(1):11-17।
27. रंजीतकुमार A, दिमित्रोव BG. तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई जिले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति. ब्रिटिश ज मल्टीडिसिप्लिनरी एडवांस्ड स्टडीज़: आर्ट्स ह्यूमैनिटीज सोशल साइंसेज. 2023;4(3):89-101।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the corresponding author

Mukesh Chand Meena is a Research Scholar in the Department of Sociology at Mohan Lal Sukhadia University and Government College Rishabhdev. His academic interests focus on sociology, social issues, rural development, and community studies. He is actively engaged in research and scholarly activities contributing to social science and higher education.

© 2026 Mukesh Chand Meena, Dr. Ranjit Kumar Meena. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/